अष्टम अध्याय
चम्पूकाव्य

संस्कृत काव्य–जगत् में पद्यकाव्य और गद्यकाव्य के अतिरिक्त चम्पूकाव्य का भी बृहत् साहित्य है। चम्पूकाव्य में गद्य और पद्य का मिश्रित प्रयोग होता है। विश्वनाथ ने कहा है– *"गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते"* (साहित्यदर्पण 61336)। दण्डी ने काव्यादर्श में (700 ई0) चम्पू का सर्वप्रथम शास्त्रीय विश्लेषण किया है– *"गद्यपद्यमयी काचिच्चम्पूरित्यभिधीयते"* (काव्यादर्श 1/31)।

'कादम्बरी', वासवदत्ता' तथा हर्षचरित आदि ग्रन्थों में पद्यों की स्थिति रहने पर भी गद्य की प्रधानता होने से वे गद्यकाव्य कहे जाते हैं। नीति–कथाएँ भी गद्य – पद्य का सम्मिश्रण है। लेकिन इनमें पद्यों का प्रयोग उपदेशवाक्य के रूप में होता है अथवा किसी कथन की पुष्टि में प्रमाण रूप में होता है जबकि चम्पूकाव्य में गद्य और पद्य समान रूप से कथानक के अंगीभूत होते हैं। चम्पू में वर्णन के लिए गद्य और भावपूर्ण भाग के लिए पद्य का प्रयोग होता है। रामायणचम्पू के अनुसार गद्य और पद्य का वही पारस्परिक सम्बन्ध है, जो संगीत में गीत और वाद्य का होता है।

नलचम्पू (10वीं शताब्दी ई0 पूर्वार्ध)

इस चम्पूकाव्य के रचयिता त्रिविक्रम भट्ट हैं। चम्पूकाव्यों में यह प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ है। इसे दमयन्तीकथा भी कहते हैं। यह सात

उच्छ्वासों में विभक्त है जिनमें नल–दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।

त्रिविक्रमभट्ट की दूसरी रचना–मदालसाचम्पू भी चम्पूकाव्य है। यह एक प्रणयकथा है। मार्कण्डेय पुराण में वर्णित कुवलयाश्व और उसकी रानी मदालसा का चरित वर्णन ही इस चम्पूकाव्य का आधार है।

हरिश्चन्द्रकृत जीवन्धरचम्पू

हरिश्चन्द्र की यह रचना गुणभद्र के उत्तरपुराण पर आधारित है। जैनधर्म के सिद्धान्तों को सरल रूप में रखने में कवि को सफलता मिली है।

सोमदेवकृत यशस्तिलकचम्पू (959 ई0)

जैनकवि सोमदेव सूरि कृत इस चम्पूकाव्य में आठ आश्वास हैं। इनमें प्रथम पाँच में यशोधर के आठ जन्मों की कथाएँ हैं और शेष तीन में जैनधर्म के सामान्य उपदेश हैं। अन्तिम आश्वासों को *'श्रावकाध्ययन'* कहते हैं। नायक यशोधर का शुभ चरित्र, उसकी पत्नी की धूर्तता, राजा की मृत्यु तथा आठ जन्मों में विभिन्न योनियों में भ्रमण करके अन्ततः जैनधर्म में दीक्षा लेने का कथानक अलंकृत शैली में वर्णित है। मनुष्य जैनधर्म का पालन करने पर किस प्रकार अपना कल्याण कर सकते हैं, इसका वर्णन इस रचना में है।

भोजकृत रामायणचम्पू (1005 – 1054 ई0)

धारा नगरी के प्रसिद्ध राजा भोज ने रामायण पर आधारित रामायण चम्पू की रचना की । यह ग्रन्थ किष्किन्धाकाण्ड तक ही लिखा गया था जिसे लक्ष्मणसूरि ने युद्धकाण्ड तक तथा वेंकटराज ने उत्तरकाण्ड जोडकर इसे पूरा किया। ग्रन्थ की शैली सरल, प्रसादपूर्ण तथा प्रवाहयुक्त है।

सोड्ढलकृत उदयसुन्दरीकथा (1026 – 1060 ई0)

'उदयसुन्दरीकथा' के रचयिता सोड्ढलकवि गुजरात के थे। गुजरात के शासक चालुक्यराज वत्सराज की प्रेरणा से इन्होंने यह कथा लिखी थी। उदयसुन्दरी आठ उच्छ्‌वासों में विभक्त है। इसमें नागराजकुमारी उदयसुन्दरी तथा प्रतिष्ठान के राजा मलयवाहन के विवाह का वर्णन है।

अनन्तभट्ट का भारतचम्पू (15 वीं शताब्दी)

अनन्तभट्ट नामक दाक्षिणात्य कवि ने 15 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह महाभारत की कथा पर आश्रित है। इसमें 12 स्तवक, 1041 पद्य तथा 200 से अधिक गद्यखण्ड हैं। वैदर्भी शैली में रचित इस काव्य की भाषा सरल और सरस है। इसमें वीररस की प्रधानता है।

कर्णपूर–कृत आनन्दवृन्दावनचम्पू (16 वीं शताब्दी)

इस चम्पूकाव्य में भगवान् कृष्ण की लीलाओं का वर्णन 22 स्तवकों में है। कृष्ण की बाल लीलाओं की अपेक्षा उनकी ललित क्रीडाओं का अधिक वर्णन है। भागवत पुराण की भक्ति–भावना का भी इसमें प्रकर्ष दिखाया गया है।

अभिनव कालिदास कृत भागवतचम्पू

कृष्ण का चरित वर्णन कवि का लक्ष्य है। यह छः स्तवकों में विभक्त है। इस रचना में कवि का प्रयोजन कृष्ण के प्रति भक्ति–भावना की अभिव्यक्ति नहीं अपितु शृंगार की अभिव्यञ्जना करना है।

कृष्ण कथाश्रित चम्पूकाव्यों में *'गोपालचम्पू '* (जीवगोस्वामी, 17 वीं शताब्दी) ; *'आनन्दकन्दचम्पू'* (मित्रमिश्र); *मुक्ताचरित्र* (रघुनाथदास); *पारिजातहरणचम्पू'* (शेषकृष्ण) प्रसिद्ध हैं।

पुराण कथाश्रित चम्पुओं की संख्या भी कम नहीं है। *'नृसिंहचम्पू'* दैवज्ञ सूर्यकवि की कृति है। *'मत्स्यावतारप्रबन्ध'* केरल के प्रख्यात कवि नारायणभट्ट की रचना है। द्रविड़–कवि नीलकण्ठ दीक्षित ने *'नीलकण्ठविजय'* चम्पू की रचना की।

ऐतिहासिक तथा चरितविषयक चम्पूओं में – 'वरदाम्बिका–परिणय चम्पू' तथा 'आनन्दरंगविजय चम्पू' प्रमुख हैं। 'वरदाम्बिकापरिणय चम्पू' की

लेखिका तिरुमलाम्बा हैं जो दक्षिण के विजयनगर के सम्राट अच्युतराय की पत्नी थी। इन्होंने अपने पतिदेव की प्रणयकथा तथा वरदाम्बिका नामक सुन्दरी से परिणय का वर्णन बहुत ही उत्साह से किया है। *'आनन्दरंगविजय चम्पू'* की रचना श्रीनिवास कवि ने की है।

आधुनिक कवियों ने भी अनेक चम्पूकाव्य लिखे हैं। पटना के प्रसिद्ध विद्वान् हरिहरकृपालु द्विवेदी पर पं० रघुनन्दन त्रिपाठी ने *हरिहरचरितचम्पू* (1936 ई0) लिखा ।

अभ्यास

1. चम्पूकाव्य किसे कहते हैं?
2. चम्पूकाव्य और नीतिकथा में क्या अन्तर है?
3. चम्पूकाव्य के प्रथम उपलब्ध ग्रन्थ और उसके रचयिता का क्या नाम है?
4. 'दमयन्तीकथा' का अन्य नाम क्या है?
5. 'यशस्तिलकचम्पू ' के लेखक कौन हैं?
6. 'रामायणचम्पू ' के लेखक कौन हैं?
7. 'उदयसुन्दरी कथा ' का वर्ण्य-विषय क्या है और इसके लेखक का क्या नाम है?
8. त्रिविक्रमभट्ट द्वारा रचित दो चम्पूकाव्य कौन से हैं?
9. किस राजा की प्रेरणा से चम्पूकार ने उदयसुन्दरी कथा लिखी गई?
10. मदालसचम्पू का वर्ण्य विषय क्या है?

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:–

(क) नलचम्पू को .... भी कहते हैं।

(ख) जीवन्धरचम्पू .... पर आधारित है।

(ग) यशस्तिलकचम्पू में .... उच्छ्वास हैं।

(घ) यशस्तिलकचम्पू के अन्तिक आश्वासों को .... कहते हैं।

(ङ) सोड्ढलकवि .... के रहने वाले थे।

(च) भारतचम्पू .... शैली में रचित है।

(छ) 'वरदाम्बिकापरिणय चम्पू ' की लेखिका .... हैं।

(ज) 'मत्स्यावतारप्रबन्ध 'केरल के प्रख्यात कवि .... की रचना है।

2. *स्तम्भ 'क'* का *स्तम्भ 'ख '* से सुमेल करें–

स्तम्भ क	*स्तम्भ ख*
1. भारतचम्पू	क. शेषकृष्ण
2. आनन्दवृन्दावन चम्पू	ख. अभिनव कालिदास
3. नीलकण्ठविजय चम्पू	ग. रघुनाथदास
4. पारिजातहरण चम्पू	घ. अनन्तभट्ट
5. मुक्ताचरित्र	ङ. नीलकण्ठ

3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखें –

नलचम्पू, रामायणचम्पू, उदयसुन्दरीकथा, वरदाम्बिकापरिणयचम्पू